हर इंसाफपसन्द नौजवान इसे पूरा पढ़े, दोस्तों के बीच बांटे, और दिए नंबरों पर संपर्क करे।

शहीदे आज़म भगतसिंह के 108 वें जन्मदिवस के अवसर पर

भगतसिंह की बात सुनो!
नई क्रान्ति की राह चलो!

न उनकी जीत अन्तिम है
न अपनी हार अन्तिम है
उठो ओ नौजवानो!
इंकलाबों के नये संस्करण रचने का
समय फिर आ रहा है.....
— शशिप्रकाश

...हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी, जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है। चाहे ऐसे व्यक्ति अँग्रेज पूँजीपति और अंग्रेज या सर्वथा भारतीय ही हों, उन्होंने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। चाहे शुद्ध भारतीय पूँजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अंतर नहीं पड़ता। ....निकट भविष्य में अंतिम युद्ध लड़ा जायेगा और यह युद्ध निर्णायक होगा। साम्राज्यवाद व पूँजीवाद कुछ दिनों के मेहमान हैं। यही वह लड़ाई है जिसमे हमने प्रत्यक्ष रूप में भाग लिया है और हम अपने पर गर्व करते हैं। इस युद्ध को न तो हमने प्रारंभ किया है और न ही यह हमारे जीवन के साथ समाप्त ही होगा...।

(*फांसी पर चढ़ने से तीन दिन पहले भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव द्वारा 20 मार्च 1931 को पंजाब के गवर्नर को भेजे गये पत्र से*)

साथियो,

शहीदे आजम भगतसिंह के जन्मदिवस पर उनको याद करना केवल अतीत का पुनःस्मरण नहीं है। बल्कि उस लड़ाई को उसके मुकाम तक पँहुचाने की जिद है जिस लड़ाई को लड़ते हुए भगतसिंह शहीद हुए थे। भगतसिंह द्वारा देखे गए समता व न्याय पर टिके समाज के स्वप्न को अपने भीतर फिर से जन्म देना है और फिर इस स्वप्न को इसी सदी में पूरा करने के लिए अपनी जान लगा देना है।

मौजूदा समय में हमारा देश एक भयानक नियति की ओर बढ़ रहा है। गोरे साहबों के जाने के बाद सत्ता में आये भूरे साहबों ने आम जनता को लूट व दमन की चक्की में बुरी तरह पीस डाला है। लोकतंत्र के नाम पर कायम व्यवस्था की मशीनरी दमन और आतंक के जरिये आम जनता पर एक निरंकुश लूटतंत्र थोप रही है। धर्म और जाति के नाम पर देश के युवाओं को बांटा जा रहा है और लोगों को एक-दूसरे के खून का प्यासा बनाया जा रहा है। पूँजी की गुलाम मीडिया युवाओं के दिल-ओ-दिमाग में आत्मकेंद्रण का जहर भर रही है। उन्हें व्यवस्था-परिवर्तन की लड़ाई से दूर कर रही है। बिकाऊ मीडिया द्वारा भ्रष्ट लुटेरे नेताओं को ''विकास पुरुष'' के रूप में, दो टके के हीरो-हीरोइनों को युवाओं के नायक के रूप में पेश किया जा रहा है। जबकि भगतसिंह जैसे जनता के असली क्रांतिकारी नायकों की शिक्षाओं को धूल व राख के नीचे दबाया जा रहा है। गतिरोध की स्थिति ने लोगों को बुरी तरह अपने शिकंजे में जकड़ लिया है। लोगों के न्याय व विवेक को जैसे लकवा मार गया है। शासक वर्ग मायावी रावण की तरह ढेर सारे मुखौटों के रूप में उपस्थित है। आम जनता इन्हीं मुखौटों में विकल्प तलाश रही है और बार-बार धोखा खा रही है। इसलिये शहीदे आज़म भगतसिंह के जन्म दिवस के अवसर पर हम इस पर्चे के माध्यम से देश में **क्रांति की स्पिरिट ताज़ा करना चाहते हैं ताकि इंसानियत की रूह में हरकत पैदा हो सके।** नौजवानों की सोई हुई प्रचण्ड शक्ति को झकझोर कर जगा देना चाहते हैं। ताकि वो आम जनता में क्रांति की अलख जगाने, उन्हें संगठित करने में जुट जायं। धार्मिक कट्टरपंथियों, जातिवादियों, स्त्रियों को कमतर मानने वाले व लम्पट, चुनावी मदारियों के पीछे घूमने वालों के लिये यह पर्चा नहीं है।

क्या था भगतसिंह का सपना?

भगतसिंह का सपना हज़ारों साल से चली आ रही अमीरी और गरीबी की व्यवस्था को इतिहास के कूड़ेदान में फेंककर, समता और न्याय पर आधारित समाज बनाकर एक नये युग का सूत्रपात करना था। इसीलिए उन्होंने 1930 में कहा था कि–हमारा मकसद केवल अंग्रेजों को भगाना नहीं है। हम इंसान के हाथों इंसान के शोषण के ख़िलाफ़ हैं, फिर शोषण करने वाले लोग चाहे गोरे हों या भूरे, देशी हों या विदेशी! कांग्रेस व गाँधी के वर्ग चरित्र और उनकी भूपतियों व धनिकों पर निर्भरता के आधार पर भगतसिंह ने चेतावनी दी थी कि इनका मकसद लूटने की ताकत गोरों की जगह मुट्ठी भर भारतीय धनिकों के हाथ में सौंपना है। भगतसिंह के लिये सच्ची आजादी का मतलब–उत्पादन के साधनों व राज–काज पर नियंत्रण उन लोगों के हाथ में आना था जो एक–एक चीज का निर्माण करते हैं। भौतिक सुविध ाएँ सबसे पहले उन्हें प्राप्त होनी चाहिए जो भौतिक सुविधाओं को पैदा करते हैं। **भगतसिंह ने 6 जून 1929 को दिल्ली के सेशन जज लियोनार्ड मिडिलटन की अदालत में अपने ऐतिहासिक बयान में कहा था कि –**'क्रांति से हमारा अभिप्राय है, मुट्ठीभर परजीवी जमातों द्वारा आम जनता की मेहनत की लूट पर आधारित, अन्याय पर आधारित मौजूदा व्यवस्था में अमूल परिवर्तन। समाज का प्रमुख अंग होते हुए भी आज मजदूरों को उनके प्राथमिक अधिकार से वंचित रखा जा रहा है और उनकी गाढ़ी कमाई का सारा ध न शोषक पूँजीपति हड़प जाते हैं। दूसरों के अन्नदाता किसान अपने परिवार सहित दाने–२ के लिए मुहताज हैं। दुनियाभर के बाजारों को कपड़ा मुहैया करने वाला बुनकर अपने तथा अपने बच्चों के तन ढँकनेभर को भी कपड़ा नहीं पा रहा। सुन्दर महलों का निर्माण करने वाले राजगीर, लोहार तथा बढ़ई स्वयं गंदे बाड़ों में रहकर ही अपनी जीवन–लीला समाप्त कर जाते हैं। इसके विपरीत समाज के जोंक शोषक पूँजीपति जरा–जरा–सी बातों के लिए लाखों का वारा–न्यारा कर देते हैं।' इसीलिये फिरोजशाह कोटला मैदान में भगतसिंह ने संगठन का नाम **एच.आर.ए.** की जगह **एच.एस.आर.ए**. (हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन) रखा और यह घोषणा की कि हमारा मकसद गोरे साहबों की जगह भूरे साहबों को लाना नहीं बल्कि एक समाजवादी वतन बनाना है। जिसमें एक आदमी द्वारा दूसरे आदमी की लूट असम्भव हो जाय। (जाहिरा तौर पर भगतसिंह के समाजवाद का मतलब सी.पी.आई., सी.पी.एम., सी.पी.आई.–एम.एल.(लिबरेशन), सपा का समाजवाद नहीं था)

लोकतन्त्र या लूटतन्त्र?

हमारे देश को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र होने का ढिंढोरा पीटा जाता है। लेकिन यह कैसा लोकतन्त्र है जिसमें मुकेश अम्बानी जैसे उद्योगपति मेहनतकशों का खून–पसीना चूसकर हर मिनट 40 लाख रूपया कमाएं, 2700 करोड़ के बने आलिशान बहुमंजिला इमारत में रहें, जबकि देश की 18 करोड़ की आबादी झुग्गी–झोपड़ियों में और 18 करोड़ की आबादी फुटपाथों पर रहने को मजबूर हो? ये कैसे जनप्रतिनिधि हैं जो संसद की कैंटीन में एक रुपये में रोटी, दो रुपये में चावल और 25 रुपये में मटन ठूंसते हैं, जबकि देश की लगभग 50 फीसदी स्त्रियाँ खून की कमी और 46 फीसदी बच्चे कुपोषण के शिकार हों और रोजाना अनाज होने के बावजूद लगभग 7000 बच्चे मौत के मुंह में समा जाते हों? जनतंत्र का क्या यही मतलब होता है कि अप्रत्यक्ष करों द्वारा आम जनता से बजट का 90 फीसदी हिस्सा वसूला जाये जबकि कुल बजट का 70 से 75 फीसदी हिस्सा मुट्ठीभर अमीरजादों के हित में खर्च कर दिया जाये? आजादी के 68 सालों बाद भी स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं से भी आम जनता महरूम है। देश के नेताओं के बिजली का बिल लाखों में और राष्ट्रपति भवन का सालाना बिजली का बिल 100 करोड़ रुपये आता है जबकि जनता अँधेरे में रहने को मजबूर है। देश के सांसदों पर पांच साल में लगभग 16 अरब 38 करोड़ खर्च किये जाते हैं, संसद के एक मिनट की कार्यवाही में ढाई लाख रुपये का खर्च आम जनता अपना पेट काटकर चुकाती है। जबकि संसद सांसदों के सोने, ऊंघने, गाली–गलौच करने, कुर्सी तोड़ने का अड्डा बन चुकी है। संसद के सत्रों में हर बार तू चोर–तू चोर, तू नंगा–तू नंगा का जुगुत्सित शोर गूंजता है।

चुनाव बस सांपनाथ और नागनाथ के आने जाने का खेल बन गया है। इस बार के लोकसभा चुनाव में विकल्प की तलाश में त्रस्त जनता ने मायावी रावण के जिस मुखौटे पर दांव लगाया था, उसने खुद को चाय बेचने वाला बताते हुए कहा था कि गरीब प्रधानमंत्री बनेगा तो गरीबों के लिए काम करेगा, अच्छे दिन आयेंगे! लेकिन सत्ता में आने के बाद इस गरीब ने गरीबों को ठेंगा दिखा अमीरों की तिजोरी भरने में पुरानी सभी सरकारों को पीछे छोड़ दिया, जो कि पहले ही तय था। क्योंकि इस गरीब को 100 कारपोरेट घरानों में से 74 ने अपनी पहली पसन्द बताया था और चुनाव प्रचार के लिये अपनी तिजोरी का मुंह खोल दिया था। महँगाई डायन को मार भगाने का वादा करने वाले मोदी के सत्ता में आने पर रसोई गैस, रेलवे भाड़ा आदि की कीमतों में जबरदस्त बढ़ोत्तरी हुयी। इस गरीब ने गरीबों की थाली से दाल, सब्जी तक छीन लिया। केंद्र व राज्य स्तर पर मोदी सरकार के मंत्रियों ने भ्रष्टाचार व गुंडागर्दी के पुराने रिकार्ड तोड़ने शुरू कर दिए हैं। मध्य प्रदेश का व्यापम घोटाला इसी की एक बानगी है। इसमे अब तक लगभग 50 लोगों की हत्या की जा चुकी है। स्वदेशी व राष्ट्रवाद का नगाड़ा बजाने वाले मोदी ने बीमा, रक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की इजाजत दे दी, जबकि यही भाजपा कांग्रेस शासन में एफ.डी.आई. का जम कर विरोध कर रही थी। अमेरिका जाकर मोदी ने दवा कंपनियों के साथ एक सौदा किया जिसके कारण जीवनरक्षक दवाइयाँ अब कई गुना महंगी हो गयीं। देश के सबसे बड़े धन्नासेठों जैसे कि अम्बानी, बिड़ला, टाटा आदि को मोदी सरकार तमाम करों से छूट दे रही है। उन्हें लगभग मुफ्त बिजली, पानी, जमीन, ब्याजरहित कर्ज, श्रम कानूनों से छूट दी जा रही है। इस बार के बजट में कारपोरेट करों की दर 30 से घटाकर 25 प्रतिशत कर दी गयी है। जिससे आम जनता पर 23,383 करोड़ रुपये का बोझ अप्रत्यक्ष करों के रूप में पड़ेगा। यही नहीं, श्रम कानूनों में इस तरह के परिवर्तन लाये गए हैं जिससे मालिकों को मजदूरों को जमकर निचोड़ने में कोई दिक्कत न हो। काला धन के मामले में मोदी, रामदेव सब चुप्पी आसन लगाकर बैठे हैं और 'अच्छे दिन' के

मामले में तो इनके भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ही सच्चाई उगल बैठे कि 'अच्छे दिन' तो चुनावी जुमला था। इन जुमलेबाजों ने सत्ता में आने के बाद अपना असली रंग दिखाना शुरू कर दिया है। ये अपने विरोध में उठने वाली हर आवाज़ व आलोचना को कुचल डालना चाहते हैं। लोगों की जुबान पर ताला लगा देना चाहते हैं। महाराष्ट्र मे भाजपा सरकार द्वारा बनाया गया सरकार की आलोचना करने पर राष्ट्रद्रोह तक लगाने वाला कानून अभिव्यक्ति की आज़ादी को कुचल डालने का एक छोटा सा उदाहरण भर है। इसी तरह मद्रास आई. आई.टी. में मोदी सरकार की आलोचना करने पर अम्बेडकर-पेरियार स्टडी सर्किल नामक ग्रुप को प्रतिबंधित कर दिया गया। एफ.टी. आई.आई. में चेयरमैन के रूप में साफ्ट पोर्न फिल्म स्टार गजेन्द्र चौहान की नियुक्ति का विरोध कर रहे छात्रों को आधी रात में कैंपस पर छापा मारकर गिरफ्तार किया गया। भाजपा की नीतियों का विरोध करने वालों पर आई.एस.आई. का एजेंट, नक्सलवादी, देशद्रोही आदि का ठप्पा लगा देना आम बात हो गई है।

अंग्रेजों के जाने के बाद 'फूट डालो और राज करो' की नीति की ज़रूरत किसको है?

लेकिन अंग्रेजों की तरह इनको भी पता है कि जनता की आवाज़ केवल कानून और डण्डे के सहारे नहीं दबाई जा सकती। इसलिए ये अंग्रेजों के आजमाये नुस्खे 'फूट डालो और राज करो' पर अमल में जुट गये हैं। इनके मातृ संगठन आर.एस.एस. व उसके आनुषांगिक संगठन पूरे देश में धर्म व सम्प्रदाय के नाम पर नफरत की आंधी सी चला दिए हैं। लव ज़िहाद, धर्मान्तरण, आबादी, हिन्दू राष्ट्र आदि के नाम पर पूरे देश में दंगों की बाढ़ सी आ गयी है। आंकड़ों के मुताबिक जनवरी 2015 से जून 2015 तक 6 महीनों में देश में 330 सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएँ हो चुकी हैं। हाल ही में उत्तर-पश्चिमी दिल्ली में संघ परिवार द्वारा मजदूर बस्तियों में दंगों की साजिश का खुलासा हुआ, जिसका पूरा ब्यौरा इस लिंक पर देखा जा सकता है- https://naujavanbharatsabha.wordpress.com/2015/09/20/rss-plan-communal-tension/ वास्तव में बढ़ती महंगाई, भुखमरी, बेरोजगारी आदि समस्याओं से लोगों का ध्यान भटकाने, जनता को एकजुट होने से रोकने के लिए जानबूझ कर पूरे देश में एक सांप्रदायिक माहौल बनाया जा रहा है। शिक्षा, इतिहास का भगवाकरण किया जा रहा है, और तमाम संस्थाओं के प्रमुख पदों पर आर.एस.एस. के लोगों को बैठाया जा रहा है। संघ का चरित्र पौराणिक रावण से इस रूप में भिन्न है कि रावण अपने दसों मुहों से एक ही बात बोलता था जबकि ये एक मुंह से सैकड़ों बात बोलते हैं। भारतीय संस्कृति के ये ठेकेदार एक तरफ **'वसुधैव कुटुम्बकम'** की बात करते हैं, दूसरी ओर अन्य धर्मावलम्बियों के खिलाफ जहर उगलते हैं। एक मुंह से नारी शक्ति की बात करते हैं तो दूसरे मुंह से आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत स्त्रियों को लक्ष्मण रेखा न पार करने व गृहणी बनने की सलाह देते हैं। पहनावा आदि के नाम पर पश्चिमी संस्कृति का हवाला देते हुए अश्लीलता फूहड़ता बढ़ने का शोर मचाते हैं। दूसरी ओर महाराष्ट्र में भाजपा के फूड एंड ड्रग मिनिस्टर गिरीश बापट के छात्रों के बीच इस बयान पर 'जो वीडियो तुम रात में देखते हो वह हम भी देखते हैं। यह मत समझना कि हम बूढ़े हो गए हैं,' चुप्पी साध जाते हैं। स्त्री-उत्पीडन पर खूब जुबानी जमा खर्च करते हैं लेकिन दुष्कर्म के आरोपी आसाराम का मुकदमे लड़ने वाले भाजपा के सुब्रह्मण्यम स्वामी के मामले में इनको 'बहू-बेटी' बचाने की बात याद नहीं रहती। यही नहीं तमाम भाजपाई नेताओं के आसाराम, नित्यानंद, राधे माँ का आशीर्वाद लेते हुए फोटो आसानी से देखा जा सकता है। हाल ही झाबुआ के पेटलावद में ब्लास्ट में 86 लोगों की मौत हो गयी जिसके बाद से आर.एस.एस. के कार्यकर्ता राजेंद्र कासवा फरार हैं। जांच के बाद मुख्य आरोपी राजेन्द्र कासवा के भाई नरेन्द्र कासवा के घर से विस्फोटक पदार्थ जिलोटिन की छड़ें बरामद हुईं। सोचने वाली बात है कि विस्फोटक और हथियारों का जखीरा किस काम के लिये इकट्ठा किया जा रहा है? इसके पहले भी मालेगांव विस्फोट में साध्वी प्रज्ञा ठाकुर व असीमानंद का हाथ होने का मामला लोगों के सामने आ चुका है। धार्मिक कट्टरपंथ की राजनीति अपने दूसरे छोर पर भी कट्टरपंथ को जन्म देती है। अशोक सिंघल और प्रवीण तोगड़िया होंगे तो ओवैसी जैसे इस्लामिक कट्टरपंथी नेता भी सांप्रदायिक उन्माद के चेहरे के रूप में मौजूद होंगे। ये दोनों एक दूसरे की राजनीति के लिये तो फायदेमंद हो सकते हैं पर दोनों धर्मों से जुड़ी आम जनता इनके चक्कर में अपने ही जानमाल का नुकसान उठाती है। भगतसिंह और एच.एस.आर.ए. ने बंटवारे की इस राजनीति के खिलाफ बहुत डटकर संघर्ष किया था। हिन्दू व मुस्लिम कट्टरपंथी संगठनों की आलोचना करते हुए उन्होंने लिखा कि-**'पीपल की एक डाल टूटते ही हिन्दुओं की धार्मिक भावनाएं चोटिल हो उठती हैं। बुतों को तोड़ने वाले मुसलमानों के ताजिये नामक एक बुत के कागज का कोना फटते ही अल्लाह का प्रकोप जाग उठता है। मनुष्यों को पशुओं से अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए, लेकिन यहाँ भारत में लोग पवित्र पशु के नाम पर एक दूसरे का सर फोड़ते हैं।** सांप्रदायिक दंगों पर राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं के **सांप्रदायिक रुख से खिन्न होकर भगतसिंह ने लिखा** था,- **'**इन धर्मों ने हिंदुस्तान का बेड़ा गर्क कर दिया है। पता नहीं कि ये धार्मिक दंगे भारतवर्ष का पीछा कब छोड़ेंगे? हमने देखा है कि इस अन्धविश्वास के बहाव में सभी बह जाते हैं। कोई बिरला ही हिंदू, मुस्लमान या सिख होता है, जो अपना दिमाग ठंडा रखता है। बाकी सब के सब धर्म के ये नामलेवा अपने नामलेवा धर्म के रोग को कायम रखने के लिए डंडे-लाठियां, तलवारें-छूरे हाथ में पकड़ लेते हैं और आपस में सर फोड़-फोड़कर मर जाते हैं। जहाँ तक देखा गया है, इन दंगों के पीछे सांप्रदायिक नेताओं और अखबारों का हाथ है। इस समय हिंदुस्तान के नेताओं ने ऐसी लीद की है कि चुप ही भली।' **'सांप्रदायिक दंगे और उनका इलाज'** नामक लेख में **भगतसिंह ने लिखा**,- 'लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग चेतना की जरूरत है। गरीब मेहनतकश व किसानों को स्पष्ट समझा देना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन पूँजीपति हैं। इसलिए तुम्हें इनके हथकण्डों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ़ कुछ न करना चाहिए। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल, राष्ट्रीयता व देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथ में लेने का यत्न करो। इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जाएंगी और तुम्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी।' इसी तरह **'अछूत समस्या'** नामक लेख में उन्होंने जातिगत भेदभाव पर बहुत तीखी चोट

की– 'कुत्ता हमारी गोद में बैठ सकता है, लेकिन एक इन्सान का हमसे संपर्क हो जाये, तो बस धर्म भ्रष्ट हो जाता है। मालवीय जी जैसे बड़े समाज सुधारक, अछूतों के बड़े प्रेमी और न जाने क्या–क्या, पहले एक मेहतर के हाथों गले में हार डलवा लेते हैं, लेकिन कपड़ों सहित स्नान किये बिना स्वयं को अशुद्ध समझते हैं। क्या खूब चाल है?.. सवाल उठता है कि इस समस्या का सही निदान क्या हो? सबसे पहले यह निर्णय कर लेना चाहिए कि सब इन्सान समान हैं। न तो जन्म से कोई बड़ा पैदा हुआ है और न तो कार्य विभाजन से। दूसरे, संगठनबद्ध हो अपने पैरों पर खड़े होकर पूरे समाज को चुनौती दे दो। तुम दूसरों की खुराक मत बनो। दूसरों के मुंह की और न ताको। लेकिन ध्यान रहे नौकर शाही के झांसे में मत फंसना। उठो, और बगावत खड़ी कर दो।'

यही नहीं हमारे समाज में धर्म–पूँजी–राजनीति का गठजोड़ तार्किकता और जनवाद को ख़त्म करने पर आमादा है। हाल ही में कन्नड़ विद्वान् प्रो.कलबुर्गी की हिन्दू कट्टरपंथी संगठन द्वारा हत्या कर दी गयी। ऐसे ही अन्धविश्वास व रूढ़ियों के खिलाफ संघर्षरत नरेन्द्र दाभोलकर की हत्या कर दी गयी थी। के. एस. भगवान को भी हिन्दू कट्टरपंथी संगठनों द्वारा मारने की धमकियाँ दी जा रही हैं। जबकि गोविन्द पानसरे की हत्या के आरोप में 'सनातन संस्था' के दो लोग गिरफ्तार किये जा चुके हैं। इन प्रगतिशील बुद्धिजीवियों पर कट्टरपंथी संगठन धर्म के अपमान का आरोप लगाते हैं। लेकिन तब तो कबीर की किताबें भी जला देनी चाहिए क्योंकि उन्होंने बहुत समय पहले ही हिन्दू व मुस्लिम दोनों धर्मों में व्याप्त रुढ़ियों व कूपमंडूकताओं पर बहुत तीखी चोट की थी। सोचने की बात है कि मध्यकाल में निरंकुश राजतंत्र के दौर में कबीर रुढ़ियों पर तीखी चोट करके भी बचे रहे, जबकि मौजूदा लोकतान्त्रिक समाज में आलोचना करने वालों को मौत के घाट उतारा जा रहा है। **भगतसिंह ने लिखा** था, 'धार्मिक अंधविश्वास और कट्टरपंथ हमारी प्रगति में बहुत बड़े बाधक हैं। वे हमारे रास्ते के रोड़े साबित हुये हैं। हमें उनसे हर हालत में छुटकारा पा लेना चाहिए। जो चीज़ आज़ाद विचारों को बर्दाश्त नहीं कर सकती, उसे समाप्त हो जाना चाहिए। (**नौजवान भारत सभा के घोषणापत्र से**)

साम्प्रदायिक फासीवाद का एक इलाज, इंकलाब! इंकलाब!!

वास्तव में पूरी दुनिया में मेहनत की लूट पर टिकी पूँजीवादी व्यवस्था असमाधेय संकट से ग्रस्त है। हमारा देश भी इससे अछूता नहीं है। आर्थिक संकट के इस दौर में धनिकों का मुनाफा कम न हो उसके लिए वो हमेशा ऐसी सरकार चाहते हैं जो उनके मुनाफे को बरकरार रखे। लेकिन धनिकों के मुनाफे को तभी बरकरार रखा जा सकता है जब जनता की सुविधाओं में कटौती की जाय। जनता इसके खिलाफ सडकों पर न उतर पड़े, इसके लिए काले कानून, डंडे, कोड़ों, जेलों की तैयारी की जाती है। लोगों की आस्थाओं, रहन–सहन, खान–पान, क्षेत्र, भाषा, राष्ट्र आदि के अंतर को मुद्दा बनाकर उनके बीच नफरत फैलाई जाती है और लोगों को एक–दूसरे के खून का प्यासा बना दिया जाता है। अतीत में पहले भी आर्य रक्त, विश्वविजय आदि के नाम पर जनता की भावनाएं भड़काकर हिटलर, मुसोलिनी जैसे फासीवादी जल्लादों की विनाशलीला को मानवता भुगत चुकी है। आर्थिक संकट से त्रस्त पूरी दुनिया के पूँजीवादी लुटेरे अपनी कब्र में सो रहे फासीवाद के प्रेत को बाहर निकालने के लिये जोर–जोर से मंत्रोच्चारण कर रहे हैं। भारत में भी बढ़ता सांप्रदायिक फासीवाद इसी का लक्षण है। **पूँजीवादी उत्पादन के संकट को भगतसिंह** बहुत अच्छी तरह समझते थे, उन्होंने लिखा, 'डालर राजा चाहे अपना ताज सम्भाल लें तो भी व्यापक मंदी यदि जारी रही और जिसका जारी रहना लाजिमी है, तो बेरोजगारों की फौज तेजी से बढ़ेगी और यह बढ़ भी रही है, क्योंकि पूँजीवादी उत्पादन व्यवस्था ही ऐसी है। यह चक्कर पूँजीवादी व्यवस्था को पटरी से उतार देगा। इसीलिए क्रान्ति अब भविष्यवाणी या सम्भावना नहीं वरन, 'व्यावहारिक राजनीति' है। जिसे सोची समझी योजना और कठोर अमल से सफल बनाया जा सकता है।'

साथियो, मौजूदा पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली आम जनता को मन्दी, मंहगाई, बेरोजगारी, भुखमरी ही दे सकती है। संकटग्रस्त पूँजीवादी व्यवस्था समाज को फासीवाद की विनाशकारी नियति की ओर धकेल रही है। पर पूँजीवाद का संकट जहां एक ओर फासीवाद का खतरा पैदा करता है, वहीं पूरे समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण के जरिये एक समतामूलक समाज की सम्भावना भी पैदा करता है। बशर्ते क्रान्तिकारी शक्तियां तैयार हों। इसलिए आज जरूरी है कि इंसाफपसंद, बहादुर नौजवान इस स्थिति के खिलाफ ताल ठोंककर खड़े हो जाएँ अन्यथा भुखमरी, कुपोषण, बेरोजगारी से त्रस्त जनता विरोध करने पर निरंकुश सत्ता के हाथों कुचली जाएगी या सत्ता के साजिश का शिकार होकर आपस में ही लड़–कट कर मरेगी या दोनों चीज़ें साथ–2 चलेंगी, और अमीरजादे हमेशा की तरह अपने महलों में बैठकर तमाशा देखेंगे। इसलिए जनता को संगठित कर इन महलों की ओर रुख करने का वक़्त आ गया है।

साथियो, भगतसिंह ने कहा था,–'' मेहनतकश वर्ग ही समाज का वास्तविक पोषक है। जनता की सर्वोपरि सत्ता की स्थापना इस वर्ग का अंतिम लक्ष्य है। इन आदर्शों के लिए और विश्वास के लिए हमें जो भी दंड दिया जायेगा हम उसका सहर्ष स्वागत करेंगे। क्रांति की इस वेदी पर हम अपना यौवन नैवेद्य के रूप में लाये हैं। हम संतुष्ट हैं और क्रांति के आगमन की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा रहे हैं।'' साथियो, भगतसिंह जिस क्रांति के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, वही हमारा प्रस्थान बिंदु है। हम मौजूदा लूट व अन्याय पर टिकी व्यवस्था के खिलाफ एक नयी क्रांति का बिगुल फूंक रहे हैं। फर्ज की इस लड़ाई में हम उन बहादुर संवेदनशील नौजवानों को आवाज दे रहे हैं जो चारो ओर अन्याय व अत्याचार को देखकर खामोश नहीं रह सकते।

नौजवान भारत सभा दिशा छात्र संगठन

सम्पर्क नं. इलाहाबाद–8858288593, 9506859878 गोरखपुर–8738863640,9455920657

www.facebook.com/naujavanbharatsabha